MODERN NAU JAVAN KI TAUBA (HINDI)

अमीरे अहले सुन्नत के बयानात की म-दनी बहारें (हिस्सा 5)

मोडर्न नौ जवान की तौबा

(और दीगर 13 म-दनी बहारें)

- क्रिकेट का शौक़ीन 05
- गुमराह कुन अ़क़ाइद से तौबा 11
- गुनाहों पर जरी नौ जवान 21
- 47 किलो वज़्न कम हो गया 10
- मुझे अपने आप से घिन आने लगती 20
- शादी में इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त 26

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मोडर्न नौ जवान की तौबा

येह रिसाला **(मोडर्न नौ जवान की तौबा)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409 E-mail : translaionmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

पहले इसे पढ़ लीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका पर **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास करम है । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शख़्सिय्यत में **रब** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी कशिश अ़त़ा फ़रमाई है कि कई गुनाहगार सिर्फ़ आप के नूरानी चेहरे और सरापा सुन्नत के दीदार की ब-र-कत से ताइब हो कर नेकियों पर **गामज़न** हो जाते हैं, नेकूकारों की रिक़्क़ते क़ल्बी में इज़ाफ़ा होता है । आप की सोह़बत **इस्लाहे़ आ'माल** का ज़रीआ़ बनती है । **चूंकि** सालिह़ीन के वाक़िआ़त में दिलों की जिला, रूह़ों की ताज़गी और नज़रो फ़िक्र की पाकीज़गी **पिन्हां** है । लिहाज़ा उम्मत की इस्लाह़ व ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़याते मुबा-रका के रोशन अब्वाब म-सलन आप की इ़बादात, मुजा-हदात, अख़्लाक़ियात व दीनी ख़िदमात के वाक़िआ़त के साथ साथ आप की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली ब-रकात व करामात और आप की तस्नीफ़ात व मक्तूबात, बयानात व मल्फ़ूज़ात के फ़ुयूज़ो ब-रकात को भी शाएअ़ करने का क़स्द किया है ।

इस सिल्सिले में **अमीरे अहले सुन्नत के बयानात की म-दनी बहारें (ह़िस्सा 5) ''मोडर्न नौ जवान की तौबा''** पेशे ख़िदमत है । (पहला रिसाला **''अमीरे अहले सुन्नत के बयानात के करिश्मे''** दूसरा रिसाला **''बद नसीब दूल्हा''** तीसरा रिसाला **''फ़िल्मी**

अदाकार की तौबा'' चौथा रिसाला ''**शराबी की तौबा**'' के नाम से **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ हो चुके हैं) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस का बग़ौर मुता-लआ़ ''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश'' की म-दनी सोच पाने का सबब बनेगा।

हमें चाहिये कि इस रिसाले को पढ़ने से पहले **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर लें, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, **सुल्ताने बह़रो बर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** ''अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाखि़ल कर देती है।''

(اَلجامع الصَّغِیر،ص۵۵۷ حدیث:۹۳۲۶،دارالکتب العلمیه بیروت)

''**फ़ैज़ाने अ़त्तार**'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की **9 निय्यतें** पेशे ख़िदमत हैं **:** ﴾**1**﴿ हर बार ह़म्द व ﴾**2**﴿ सलात और ﴾**3**﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾**4**﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (सफ़ह़ा नम्बर 3 के ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾**5**﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾**6**﴿ क़िब्ला रू मुता-लआ़ करूंगा ﴾**7**﴿ जहां जहां ''**अल्लाह**'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾**8**﴿ जहां जहां ''**सरकार**'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा ﴾**9**﴿ दूसरों को येह रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा और ह़स्बे तौफ़ीक़ इस रिसाले को तक़्सीम भी करूंगा।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

20 **ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम** सि. 1430 हि. 21 अक्तूबर सि. 2009 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **''जिन्नात का बादशाह''** में ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं, **नबियों** के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : **''जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे ।''**

(کنزُالعُمّال ج ۱ ص۲۵٦ حدیث۲۲۳۸ دارالکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿1﴾ मोडर्न नौ जवान की तौबा

मदीनतुल औलिया (मुलतान शरीफ़) में मुक़ीम इस्लामी भाई की तह़रीर का लुब्बे लुबाब है कि मैं ने जिस घराने में आंख खोली वोह फ़ेशन के ए'तिबार से अ़लाक़े भर में मश्हूर था ह़त्ता कि नित नए फ़ेशन की इब्तिदा हमारे ही घर से होती । घर वालों के बे जा लाड प्यार ने मुझे बिगाड़ कर रख दिया था । मेरे शबो रोज़ गाने बाजों की नज़्र हो चुके थे । नमाज़ व रोज़े की कुछ परवाह न थी,

मुझ पर डान्स सीखने का भूत सुवार हो चुका था, लड़ाई झगड़ा, गाली गलोच, मज़ाक़ मस्ख़री मेरी रग रग में बस चुकी थी। **बद मज़्हबों की सोहबते बद में रहने की वजह से औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام **के मानने वालों को गालियां देना अपने लिये बाइ़से फ़ख़्र समझता था।** मेरी ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी में नेकियों की बहार का सबब येह हुवा कि माहे **र-मज़ानुल मुबारक** के दौरान मेरी मुलाक़ात सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए, सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से हुई, उन्हों ने आगे बढ़ कर बड़े आ़जिज़ाना अन्दाज़ में मुझ से मुलाक़ात की और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयान **''अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर''** का केसिट सुनने के लिये दिया मैं ने जूंही सुन्नतों भरा बयान सुनना शुरूअ़ किया अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिक़्क़त अंगेज़ अन्दाज़ ने मेरे दिल की दुन्या को जे़रो ज़बर कर के रख दिया। मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **ता दमे तह़रीर म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ फ़ैज़ाने सुन्नत से दो मस्जिद दर्स देने की सआ़दत नसीब हो रही है।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ क्रिकेट का शौक़ीन

रावल पिन्डी (पंजाब, पाकिस्तान) के अ़लाक़े गोजर ख़ान के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने से क़ब्ल मज़्हबी ज़ेह्न न होने की वजह से मैं गुनाहों की वादी में सरगर्दां था और **जुनून की ह़द तक क्रिकेट खेलने का शौक़ीन था ।** हमारा गाउं, शहर से तक़्रीबन **12** किलो मीटर दूर है, मैं सिर्फ़ क्रिकेट खेलने के लिये अपने गाउं से शहर आता और खेल में इस क़दर मगन हो जाता कि दिन गुज़रने का एह़सास तक न होता, फ़िल्में डिरामे देखने में इस क़दर मुन्हमिक हो जाता कि मुअज़्ज़िन की अज़ान पर मुझे रात गुज़रने का पता चलता । रात को ज़ियादा देर तक जागने की वजह से जब कभी वालिद साह़िब मुझे सो जाने का कहते तो मैं टका सा जवाब दे कर फिर फ़िल्म देखने लग जाता । अल ग़रज़ गुनाहों के घटा टोप अंधेरे में भटक्ता फिर रहा था । आख़िर कार गुनाहों के सियाह बादल छटे और मेरी क़िस्मत का सितारा चमका । हुवा यूं कि सि. 2000 ई. ब मुत़ाबिक़ सि. 1421 हि. में मेरे एक दोस्त जो

कि **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता थे उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे दा'वते इस्लामी के तह्त **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की तरग़ीब दिलाई, लेकिन **आह !** मैं सुन्नते ए'तिकाफ़ में शिर्कत करने से महरूम रहा हां इतना ज़रूर था कि शाम को काम से फ़ारिग़ हो कर **मो'तकिफ़** इस्लामी भाइयों की सोह़बत की ब-रकात लूटने के लिये मस्जिद ह़ाज़िर हो जाता। **रात को सीखने सिखाने के मुख़्तलिफ़ ह़ल्क़ों में शिर्कत कर के सुन्नतें सीखता, दुआ़एं याद करता और ह़ल्क़ों से फ़राग़त के बा'द अपने घर चला आता।** चन्द दिन तो मेरा येही मा'मूल रहा इस के बा'द एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में मैं ने रात वहीं ए'तिकाफ़ करना शुरूअ़ कर दिया। **26**वीं शब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का केसिट बयान बनाम **''गाने बाजे की होल नाकियां''** चलाया गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **पुरसोज़ बयान में गाने बाजे के अ़ज़ाबात का तज़्किरा सुन कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए।** मैं हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी ए'तिकाफ़ में मैं ने दाढ़ी शरीफ़

सजाने की निय्यत करने के साथ साथ इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया।

इस म-दनी इन्क़िलाब के बा'द मैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दस्ते अक़्दस पर बैअ़त हो कर सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में शामिल हो गया। मेरी **इन्फ़िरादी कोशिश** और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **वालिद साह़िब और बड़े भाई ने भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़ सजा ली।** हमारे घर में अब गानों के बजाए सुन्नतों भरे बयानात और आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तों की बा ब-र-कत आवाज़ें गूंजने लगीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर बारह माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के बा'द डिवीज़न क़ाफ़िला ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचाने में मश्ग़ूल हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ इस्लाह़ का सामान

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के मश्हूर शहर **ह़ैदरआबाद** में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं गुनाहों के घटा टोप

अंधेरों में भटक्ता फिर रहा था । **फ़िल्में डिरामे देखना, गाने सुनना, नमाज़ें क़ज़ा करना मेरी फ़ितरते सानिया बन चुकी थी ।** दाढ़ी मुंडाने और बद मज़्हबों की सोहबते बद में अपना सारा सारा दिन गंवाने में फ़ख़्र महसूस करता था । अल ग़रज़ मेरे शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे । आख़िर कार मेरी ज़िन्दगी की ग़फ़लत के अय्याम ख़त्म हुए और मेरी इस्लाह का सामान यूं हुवा कि मेरा छोटा भाई तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया । वोह अक्सर अवक़ात शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें** घर ला कर सुना करता था । चुनान्चे

एक दिन हस्बे मा'मूल उस ने शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान **''बे नमाज़ी की सज़ाएं''** चलाया । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की **रिक़्क़त अंगेज़ पुरसोज़ आवाज़ जूंही मेरे कानों में पड़ी मेरा दिल उस जानिब खिंचता चला गया और बिल आख़िर मैं ने पूरी तवज्जोह से बयान सुनना शुरूअ कर दिया ।** शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर मेरे दिल में पैवस्त होते रहे । बयान जूंही ख़त्म हुवा मेरा दिल कांप उठा । मैं ने उसी वक़्त **अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों**

से तौबा की, नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी और दा'वते इस्लामी के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लिया जिस ने सोने पर सुहागे का काम किया और मैं दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयान की ब-र-कत से ता दमे तह़रीर दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ **तह़सील मुशा-वरत** के ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से नेकी की दा'वत आ़म करने की कोशिश कर रहा हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ 47 किलो वज़्न कम हो गया

बाबुल मदीना (कराची) में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के मक्तूब का ख़ुलासा है कि मुझे **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ **मो'तकिफ़** होने की सआ़दत नसीब हो गई। दौराने ए'तिकाफ़ सुन्नतें और आदाब सीखने के साथ साथ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयानात सुनने के भी मवाक़ेअ़ मुयस्सर आते रहे। एक दिन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **पेट के क़ुफ़्ले मदीना** से

मु-तअ़ल्लिक़ सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत नसीब हुई, दौराने बयान आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कम खाने के फ़वाइद बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि **"मैं ने भी पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगा कर अपना दस किलो वज़्न कम किया है।"** आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस बयान का ऐसा असर हुवा कि मैं ने भी पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाना शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **बारह माह में ही मेरा वज़्न 130 किलो से कम हो कर 83 किलो हो चुका है।** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की ब-र-कत से जहां मेरा वज़्न इस क़दर कम हुवा वहीं मुझे नमाज़ व रोज़े के मसाइल सीखने के साथ साथ اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ व रोज़े की पाबन्दी भी नसीब हो गई है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ गुमराह कुन अ़क़ाइद से तौबा

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर **मुज़फ़्फ़र गढ़** में मुक़ीम इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : मेरी बद क़िस्मती कि मैं ने दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले **बद मज़्हबों के मद्रसे में ज़ेरे ता'लीम रह कर क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ किया।** उन की सोह़बत में रहता और अक्सरो बेशतर बद मज़्हब

मुक़र्ररीन की केसिटें सुनता रहता, येही वजह थी कि मेरी ज़िन्दगी इश्क़े रसूल की चाश्नी से ना आशना थी। **मैं बद मज़्हबी में इस क़दर बढ़ चुका था कि या "रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **" का ना'रा लगाने वाले उ-लमाए अहले सुन्नत को** مَعَاذَاللّٰه **गालियां तक देने से गुरेज़ न करता,** घर वालों के समझाने के बा वुजूद अपने बातिल अ़क़ाइद पर ही अड़ा रहा। माहे **र-मज़ानुल मुबारक** सि. 1426 हि. ब मुताबिक़ सि. 2005 ई. में मुझे मेरे बड़े भाई (जो कि कराची में रिहाइश पज़ीर थे) ने तरावीह़ पढ़ाने के लिये बुला लिया। मेरे भाई के दोस्त (जो कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता थे) को जब मेरे गुमराह कुन अ़क़ाइद के बारे में पता चला तो उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **मुझे बद मज़्हबों के कुफ़्रिय्या व गुमराह कुन अ़क़ाइद के बारे में बताया, ह़स्बे ज़रूरत किताबें भी दिखाईं** लेकिन मेरी आंखों पर तअ़स्सुब की पट्टी बंध चुकी थी जो मुझे राहे ह़क़ देखने से बाज़ रखे हुए थी मगर उन इस्लामी भाई ने भी हिम्मत न हारी।

बिल आख़िर ज़ुल्मत व गुमराही के सियाह बादल छटे और मेरी ज़िन्दगी में हिदायत का आफ़्ताब तुलूअ़ हुवा। हुवा यूं कि एक दिन नमाज़े तरावीह़ से फ़राग़त के बा'द मेरी मुलाक़ात उसी इस्लामी भाई से हुई, उन्हों ने निहायत मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले

सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का केसिट बयान सुनाना शुरूअ़ कर दिया। **बयान सुनते ही मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, मैं ने उसी वक़्त गुमराह कुन अ़क़ाइद से तौबा की और दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) **करने के लिये दाख़िला ले लिया।** ता दमे तह़रीर मैं द-र-जए सालिसा का त़ालिबे इ़ल्म हूं और **12** माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ फ़ेशन का दिल दादह कैसे ताइब हुवा ?

डेरा ग़ाज़ी ख़ान (पंजाब, पाकिस्तान) में मुक़ीम इस्लामी भाई ने अपनी ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी में बहार आने का तज़्किरा कुछ यूं किया कि मैं ने जिस घराने में आंख खोली वोह अ़लाक़े में मज़्हबी लिह़ाज़ से जाना पहचाना जाता था क्यूं कि मेरे दादाजान, वालिद साह़िब और ख़ानदान के कसीर अफ़्राद ह़ाफ़िज़े क़ुरआन हैं। दादाजान और वालिद साह़िब तो एक अ़र्से तक इमामत भी फ़रमाते रहे थे। इस लिह़ाज़ से होना तो येह चाहिये था कि मैं अपने आबाओ अज्दाद के नक़्शे क़दम पर चलता लेकिन आह ! सद

करोड़ आह! "**चराग़ तले अंधेरा**" के मिस्दाक़ मैं बे अ़-मली के घटा टोप अंधेरे में डूबा हुवा था। लड़ाई झगड़े करना, गालियां बकना, फ़िल्मों डिरामों से दिल लुभाना, बद निगाही करना, दोस्तों के साथ फ़ुज़ूल घूमना फिरना, इ़श्क़े मजाज़ी में वक़्त बरबाद करना और हर नए फ़ेशन को अपनाने की तमन्ना करना वग़ैरा वग़ैरा गुनाह मेरी ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुके थे, ह़त्ता कि मैं अपने ख़ानदान में वोह वाहिद शख़्स हूं कि जिस ने ट्राउज़र, पेन्ट शर्ट जैसा घटिया क़िस्म का लिबास पहना। छुट्टी के दिन मैं सारा दिन मिनी सिनेमा में फ़िल्में देखने में बरबाद कर देता, कई सालों तक इसी त़रह़ मैं गुनाहों की सियाह वादियों में भटक्ता रहा।

सि. 1424 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2003 ई. के **र-मज़ानुल मुबारक** की आमद हुई तो मैं ने अपने एक दोस्त के हमराह **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे का सुन्नते ए'तिकाफ़ करने की तरकीब बनाई, और वक़्ते मुक़र्ररा पर हम अपने गाउं की मस्जिद में **मो'तकिफ़** हो गए। न तो हमें मस्जिद के आदाब का लिह़ाज़ था और न ही ए'तिकाफ़ की एह़तियातें मा'लूम थीं। जूं तूं हम ने ए'तिकाफ़ के दिन गुज़ार लिये। अगर्चे सारा ए'तिकाफ़ ग़फ़्लत की नज़्र हो गया था लेकिन फिर भी ए'तिकाफ़ के बा'द मैं नेकियों की जानिब माइल रहने लगा। कुछ अ़र्से बा'द मैं दीनी किताबों के एक

मक्तबे पर बयान की केसिट ख़रीदने की निय्यत से गया।

मैं ने अपने मत्लूबा बयान की केसिट त़लब की लेकिन मुझे वोह बयान न मिल सका। मक्तबे के मालिक चूंकि दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादार इस्लामी भाई थे, लिहाज़ा उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का केसिट बयान ख़रीदने की तरग़ीब दिलाई। उन की इन्फ़िरादी कोशिश की वजह से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की एक केसिट ख़रीद ली। **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा केसिटों की क़ीमत चूंकि आ़म रेट से कम थी इस लिये मैं ने उस के साथ एक और केसिट भी ख़रीद ली। बयानात की केसिटें ले कर मैं अपनी वर्क शॉप पर पहुंचा जहां मैं काम करता था, सुब्ह़ का वक़्त था, मैं ने सोचा कि आज दिन का आग़ाज़ बयान सुनने से करते हैं। लिहाज़ा मैं ने बयान की केसिट लगा दी। बयान की इब्तिदा में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इ़श्क़े रसूल में डूब कर पढ़ा हुवा ख़ुत़्बा शुरूअ़ हुवा तो इब्तिदाई अल्फ़ाज़ सुन कर ही मुझे काफ़ी सुकून मिला और **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर किस त़रह़ मेरे दिल में पैवस्त हुए, मुझे आज भी याद है।** बस मेरा दिल चाहता है कि मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के उन्ही

अल्फ़ाज़ को बार बार सुनता रहूं ! जैसे जैसे मैं येह बयान सुनता गया मेरे दिल में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की महब्बत घर करती चली गई ह़ालां कि **मैं उस वक़्त भी नहीं जानता था कि बयान करने वाली येह अ़ज़ीम हस्ती कौन हैं ।** अल ग़रज़ मैं ने येह बयान मुकम्मल सुना, इस की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि मैं नमाज़ का पाबन्द बन गया यहां तक कि मैं ने अपनी जेब में ह़ाज़िरिये नमाज़ की कॉपी रख ली और हर नमाज़ की ह़ाज़िरी ख़ुद ही लगाया करता था । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ यूं मेरी फ़ेशन से जान छूट गई और मुझे उस बे ढंगे लिबास से भी नफ़रत हो गई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे इ़नायत से दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी के बा'द आज तक फ़ेशन वाला लिबास तो क्या मैं ने रंगीन कपड़े भी नहीं सिलवाए बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नत के मुत़ाबिक़ सफ़ेद कुरता, शलवार पहनता हूं।

मुझे म-दनी इन्आ़मात का कार्ड भी उन्ही मक्तबे के इस्लामी भाई ने हदिय्यतन दिया मैं नमाज़े फ़ज्र जमाअ़त से तो क्या घर में भी नहीं पढ़ता था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की ब-र-कत से फ़राइज़ तो फ़राइज़ मैं नवाफ़िल भी पाबन्दी से अदा करने की कोशिश करता हूं और अब अज़ाने फ़ज्र से आधा

घन्टा पहले ही उठ जाता हूं और मस्जिद में जा कर तहज्जुद की नमाज़ अदा करता हूं, मौक़अ़ मिलने पर अज़ाने फ़ज्र भी देता हूं।

कुछ दिनों के बा'द मा'लूम हुवा कि हमारे अ़लाक़े में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शहज़ादए अ़त्तार ह़ज़रत मौलाना अबू उसैद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी अल म-दनी سَلَّمَہ الغنی तशरीफ़ ला रहे हैं। मैं भी उस इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हो गया, इज्तिमाअ़ के आख़िर में शहज़ादए अ़त्तार के ज़रीए اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुरीद बन गया। एक पीरे कामिल के हाथों में हाथ देने की ब-र-कत यूं ज़ाहिर हुई कि एक हफ़्ते के बा'द वालिदैन की इजाज़त से मुझ जैसा गुनाहगार दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) के लिये दा'वते इस्लामी के "**जामिअ़तुल मदीना**" में दाख़िल हो कर **इ़ल्मे दीन** ह़ासिल करने लगा। मैं नमाज़े ज़ोहर तक जामिअ़तुल मदीना में ता'लीम ह़ासिल करता और ज़ोहर के बा'द वर्क शॉप पर जा कर काम करता, और फिर रात को अपने अस्बाक़ याद करता, क्यूं कि कुछ मजबूरियों की वजह से मैं वर्क शॉप का काम नहीं छोड़ सकता था इस लिये वक़्त यूंही गुज़रता गया। कुछ ह़ालात बेहतर हुए तो मैं ने वर्क शॉप पर काम छोड़ कर अपने आप को मुकम्मल त़ौर पर **इ़ल्मे दीन** सीखने के लिये **वक़्फ़** कर दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर दा'वते इस्लामी के जामिआ़

बनाम ''जामिअ़तुल मदीना'' बाबुल मदीना (कराची) में दौरए ह़दीस का त़ालिबुल इ़ल्म हूं और इस के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के इ़ल्मी और तह़क़ीक़ी शो'बे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** में तह़रीरी काम की भी सआ़दत मिली हुई है। इस में मेरा अपना कोई कमाल नहीं बल्कि येह सब मेरे पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **फ़ैज़** है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿7﴾ केसिट बयान की ब-र-कत

बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के शहर **कोएटा** में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे। फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना, नमाज़ें क़ज़ा करना, वालिदैन को सताना और लोगों की दिल आज़ारी करना वग़ैरहा गुनाह मेरी ज़िन्दगी का **जुज़्वे ला यन्फ़क** बन चुके थे। मेरी क़िस्मत यूं चमकी कि सि. 1422 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2001 ई. में मेरी मुलाक़ात तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता

एक इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **सुन्नतों भरे बयानात** की दो केसिटें बनाम **''बद नसीब दूल्हा'', ''बे नमाज़ी का अन्जाम''** तोहूफ़तन पेश कीं। इन बयानात को सुनने की ब-र-कत से गुनाहों से बेज़ारी का ज़ेहन बना, मैं दा'वते इस्लामी के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने लगा और रफ़्ता रफ़्ता दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। थोड़े अ़र्से के बा'द एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में **63** दिन के **तरबिय्यती कोर्स** करने की भी सआ़दत नसीब हुई। तरबिय्यती कोर्स के दौरान मज़ीद **इ़ल्मे दीन** सीखने का जज़्बा मिला तो मैं ने इ़ल्मे दीन सीखने के लिये **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया। ता दमे तह़रीर मैं जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ क़ब्र के सुवाल जवाब

बाबुल मदीना (कराची) में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि **मैं** अपने मह़ल्ले की मस्जिद में कभी कभार नमाज़ पढ़ लिया करता था लेकिन नमाज़ों में इस्तिक़ामत न

मिलती थी कभी पढ़ ली तो कभी सुस्ती हो गई। सि. 1419 हि. ब मुताबिक़ सि. 1999 ई. की बात है कि मस्जिद में दर्स देने वाले इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में मैं ने मद्र-सतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में दाख़िला ले लिया और क़ुरआने पाक दुरुस्त त़रीक़े से पढ़ने की सअ़्य करने लगा लेकिन फिर भी म-दनी माह़ोल की त़रफ़ न तो कोई रग़्बत हुई और न ही **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने का ज़ेह्न बना। इस दौरान एक इस्लामी भाई ने मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का केसिट बयान बनाम **''क़ब्र के सुवाल जवाब''** सुनने के लिये दिया। मैं ने मज़्कूरा बयान अपने घर वालों के साथ बैठ कर सुनने की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक वलिय्ये कामिल की पुर तासीर आवाज़ की ब-र-कत से न सिर्फ़ मुझे म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत मिली बल्कि मुझ समेत तमाम घर वालों ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया। ता दमे तह़रीर **तह़सील सत़्ह़ पर म-दनी इन्आ़मात** के ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ मुझे अपने आप से घिन आने लगती

बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के शहर **कोएटा** में मुक़ीम एक इस्लामी भाई ने अपनी तौबा के अह्वाल इस त़रह़ बयान किये : मैं मुआ़-शरे का एक निहायत ही बिगड़ा हुवा शख़्स था। फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना, नित नए फ़ेशन पर मर मिटना, बे ह़याई का बाज़ार गर्म करना और दाढ़ी मुंडाना वग़ैरहा गुनाहों से मेरे शबो रोज़ अटे हुए थे। मेरी इस्लाह़ का सामान यूं हुवा कि एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का केसिट बयान बनाम **''क़ब्र का इम्तिह़ान''** सुनने के लिये दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मज़्कूरा **सुन्नतों भरा बयान** सुन कर मेरे दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। एक वलिय्ये कामिल के नसीह़त आमोज़ इर्शादात व मल्फ़ूज़ात सुन कर मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और अपने आप को म-दनी रंग में रंग लिया। सिर्फ़ इतना नहीं बल्कि इस बयान की ब-र-कत से वालिदैन का अ-दबो एह़तिराम करने के साथ साथ मैं ने दाढ़ी, इ़मामा और ज़ुल्फ़ों जैसी प्यारी प्यारी सुन्नतों को भी अपना लिया ह़ालां कि इस से क़ब्ल मैं ने इन के बारे में सोचा तक न था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से मेरे लिये येह सब कुछ आसान हो गया। एक वोह वक़्त था कि सिरे

से नमाज़ें ही क़ज़ा हो जाया करतीं थीं लेकिन आज **दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से नमाज़ तो कुजा सिर्फ़ मस्जिद की जमाअ़त तर्क हो जाए तो दिल रोता है कि मुझे नमाज़े बा जमाअ़त की सआ़दत क्यूं नहीं मिली ।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ गुनाहों पर जरी नौ जवान

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर **ओकाड़ा** में मुक़ीम इस्लामी भाई ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के केसिट बयान की **म-दनी बहार** बयान की । जिस का ख़ुलासा येह है : तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं एक मॉडर्न नौ जवान था । हर क़िस्म का नशा म-सलन अफ़्यून, चरस और शराब वग़ैरा का इस्ति'माल मेरा मा'मूल बन चुके थे, अफ़्सोस ! मैं जूए की ला'नत में भी जकड़ा हुवा था । बुरी सोह़बत की वजह से मैं **गुनाहों पर इस क़दर जरी** हो गया था कि मुसाफ़िरों को लूट लेना मेरे मशाग़िल में शामिल हो चुका था । मेरी इन ह़-रकाते बद की वजह से मेरे घर वाले भी मुझ से तंग आ चुके थे । मैं न जाने मज़ीद कितना अ़र्सा गुनाहों की इस दलदल में फंसा रहता लेकिन

ख़ुश नसीबी से मेरी क़िस्मत का सितारा यूं चमका कि मेरे मामूंज़ाद भाई जो कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हैं, उन्हों ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का केसिट बयान बनाम **''मुर्दे की बे बसी''** सुनाया। इस बयान ने तो मेरे दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया कि मैं ने हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और क़ुरआने मजीद दुरुस्त मख़ारिज से पढ़ने के लिये मद्र-सतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में दाख़िला ले लिया। येह बयान देते वक़्त मैं **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं और तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़ैली ह़ल्क़ा के ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से मैं म-दनी कामों की धूमें मचाने में कोशां हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ मुआ़-शरे का बिगड़ा हुवा शख़्स

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर **चिश्तियां** में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दाढ़ी मुंडाना, वालिदैन की ना फ़रमानी, नमाज़ें क़ज़ा करना वग़ैरा वग़ैरा गुनाह मेरी ज़िन्दगी का

हिस्सा बन चुके थे। गाने बाजे सुनने का तो मुझे जुनून की हद तक शौक़ था हर वक़्त मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गाने मेरे मोबाइल फ़ोन और कम्पयूटर में मौजूद रहते थे। इन्टर नेट का ग़लत इस्ति'माल करने के गुनाह में भी मैं मुलव्वस था। जीन्ज़ की पेन्ट के सिवा लिबास न पहनता ह़त्ता कि एक मरतबा ईद के मौक़अ़ पर मेरे लिये वालिद साहिब ने सूट सिलवा लिया लेकिन मैं ने पहनने से इन्कार कर दिया, नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ पेन्ट शर्ट ख़रीदी और फिर ईद के पुर मुसर्रत मौक़अ़ पर इसी बेहूदा लिबास में मल्बूस हुवा। फ़ेशन का दिल दादह होने की वजह से मैं ने इ़मामा और कुरते के बारे में कभी सोचा भी न था, अल ग़रज़ गुनाहों भरी ज़िनदगी में शबो रोज़ गुज़रते रहे। मेरे सुधरने के अस्बाब यूं हुए कि हमारी मस्जिद में जो नए इमाम साहिब तशरीफ़ लाए वोह तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे। एक दिन उन्हों ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की तरग़ीब दिलाई, उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** के सबब मैं ने एक दो मरतबा हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। **एक** दिन उन्हों ने मेरे वालिद साहिब को अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार**

क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान बनाम "**मुर्दे की बे बसी**" तोह्फ़तन दिया । एक रात मुझे येह बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस बयान की ब-र-कत से मेरे दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा होने लगा । ख़ास कर इन अल्फ़ाज़ ने मेरे दिल पर काफ़ी असर किया कि "**इन्सान को मरने के बा'द अंधेरी क़ब्र के ह़वाले कर दिया जाएगा, गाड़ी हुई तो गेरेज में खड़ी रह जाएगी**" मैं ने हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा करते हुए अपने मोबाइल और कम्पयूटर को गानों की नुहूसतों से पाक कर दिया और अपने चेहरे पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी शरीफ़ सजाने के साथ साथ अपने सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ म-दनी लिबास को भी ज़ैबे तन कर लिया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं यूनिवर्सिटी के होस्टल में **दा'वते इस्लामी** के शो'बए ता'लीम के ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हूं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ क़ब्र की पहली रात

बाबुल मदीना (कराची) के इस्लामी भाई के मक्तूब का ख़ुलासा है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं गुनाहों की दलदल में धंसता जा रहा था और इस्लाह़ की कोई सबील नज़र नहीं आ रही थी यहां तक कि मुझ पर स्टेज डिरामों में काम करने का भूत सुवार हो गया और मैं इस बुरे काम में धंसता गया। आख़िर कार गुनाहों की बीमारी से मुझे छुटकारा इस त़रह़ नसीब हुवा कि ख़ुश क़िस्मती से सि. 1424 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. **2004** ई. में मुझे ज़माने के वलिय्ये कामिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान **''क़ब्र की पहली रात''** सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की ब-र-कत से मेरा दिल चोट खा गया। कुछ दिनों के बा'द आ़शिक़ाने रसूल के साथ मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत नसीब हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ मुझे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी नसीब हो गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ शादी में इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर **साहीवाल** के अ़लाक़े चेचा वत़नी में मुक़ीम एक इस्लामी भाई ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की **म-दनी बहार** इस त़रह़ बयान की : **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मैं मुख़्तलिफ़ गुनाहों म-सलन वालिदैन से झगड़ा करना, नमाज़ें क़ज़ा करना, नेकियों से ग़फ़्लत में मुब्तला था गानों बाजों से इस क़दर शदीद मह़ब्बत थी कि मैं ने येह निय्यते फ़ासिदा कर रखी थी कि अपनी शादी पर مَعَاذَاللّٰه ख़ूब नाचरंग की मह़फ़िल सजाऊंगा। अल ग़रज़ मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों की तारीक रात के घटा टोप अंधेरे में डूबे हुए थे। मेरे सुधरने का एहतिमाम यूं हुवा कि मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान बनाम **''गाने बाजे की होल नाकियां''** सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। येह बयान सुनने की ब-र-कत से जहां मुझे अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई वहां اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह ज़ेह्न भी बना कि अब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी तक़रीबे निकाह़ को सुन्नत के मुत़ाबिक़ अदा करूंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपनी इस निय्यत को अ-मली जामा भी पहनाया और मेरी शादी में गाने बाजे की महफ़िल के बजाए **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** मुन्अ़क़िद हुवा। हमारे गाउं के लोग इस **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** से बेहद मु-तअस्सिर हुए कि हम ने पहली मरतबा शादी के मौक़अ़ पर इस त़रह़ का **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** देखा है। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से मेरी शादी के बा'द एक और इस्लामी भाई की शादी के मौक़अ़ पर भी इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द तो हमारे गाउं के लोगों का शादी के मौक़अ़ पर **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** मुन्अ़क़िद करने का म-दनी ज़ेह्न बन चुका है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ मैं ठट्ठा मज़ाक़ करने का आ़दी था

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं एक मॉडर्न ख़ानदान का फ़र्द होने की वजह से त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में जकड़ा हुवा था। डान्स करना, गाने गाना, हर वक़्त दूसरों से मज़ाक़ मस्ख़री करते

रहना, बद निगाही करना, गाली गलोच व लड़ाई झगड़ा करना, बुज़ुर्गों के साथ अ़क़ीदत रखने वालों को गालियां देना और उन का मज़ाक़ उड़ाना, मुख़्तसर येह कि त़रह़ त़रह़ के गुनाहों से अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम बरबाद कर रहा था और **इ़ल्मे दीन** से बिल्कुल आ़री था । आह ! मेरी ज़िन्दगी का एक हि़स्सा इसी ग़फ़्लत की नज़्र हो गया और मुझे अपनी ग़-लति़यों का एह़सास तक न हुवा । आख़िर कार मेरी आंखों से ग़फ़्लत के पर्दे हटे और मेरी इस्लाह़ यूं हुई की **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई ने **र-मज़ानुल मुबारक** के **मु-तबर्रक** माह में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान बनाम **''अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर''** सुनने के लिये मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह बयान सुन कर मुझ में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया और मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और मुझे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया । ता दमे तह़रीर **मैं म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए रोज़ाना दो दर्स देने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं ।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप भी म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी तरह तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जग-मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसिट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इ़मामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौ़र पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्ह़ूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़ह़े पर वाक़िए़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **''म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी, शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने, अह़मद आबाद, गुजरात (शो'बए अमीरे अहले सुन्नत, मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या)''**

नाम मआ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं..... ख़त़ मिलने का पता.....
फ़ोन नम्बर (मआ़ कोड) :..... ई मेइल एड्रेस .....
इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी.....

मुन्दरिजए बाला ज़राएआ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़ह़े पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّ وَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साहिब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ा पूर, अह़मद आबाद, गुजरात (मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या)''** के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।